International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 6, June - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मत्स्यपालन की सार्वभौमिकता एवं बाधक तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

सुरजीत कुमार

शोध छात्र
अर्थशास्त्र विभाग
ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा।

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य मत्स्यपालन की सार्वभौमिकता एवं साधक तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना था। इसके लिए शोधार्थी द्वारा समस्तीपुर जिला क्षेत्र के उद्देश्यात्मक चयन पद्धति के आधार पर 150 बेरोजगार युवकों का चयन उत्तरदाताओं के रूप में किया गया। स्वयं शोधार्थी द्वारा विकसित प्रश्नावली के माध्यम से संगत सूचनाऐं एकत्रित की गई एवं विश्लेषणात्मक पद्धति के आधार पर संग्रहित सूचनाओं का विश्लेषण किया गया। प्राप्त परिणाम में पाया गया कि– प्रस्तुत शोध में प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष के रूप में निम्नांकित परिणाम स्पष्ट है:: (i) मत्स्य पालन से संबंधित व्यवसाय के बारे में युवकों को जानकारी रहने के बावजूद व्यवसाय की सार्वभौतिकता निम्न है।

(ii) मत्स्य पालन के व्यवसाय में संबंधित अभिरूचि की कमी एक मुख्य बाधक कारक है।

(iii) व्यक्तियों में मत्स्य पालन से संबंधित सरकारी योग्ताओं की जानकारी की कमी का अभाव भी मुख्य बाधा है। (iv) मत्स्य पालन में व्यवसाय में संबंधित आवश्यक संसाधनों की कमी भी एक मुख्य बाधक तत्व है।

1. परिचय :–

मछली जलीय पर्यावरण पर आक्षित जलचर जीव है तथा जलीय पर्यावरण को संतुलित रखने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह कथन अपने आप में पर्याप्त महत्व रखता है कि जिस पानी में मछली नहीं हो तो निश्चित ही उस पानी की जलीय जैविक स्थिति समाप्त होती है। वैज्ञानिका द्वारा मछली को जीवन सूचक माना गया है। विभिन्न जलस्रोतों में चाहे तीव्र अथवा मंद गति से प्रवाहित होने वाली नदियाँ हो, चाहे प्राकृतिक झीलें, तालाब अथवा मानव निर्मित या मध्यम आकार के जलाशय , सभी के पर्यावरण का यदि सूक्ष्म अध्ययन किया जाऐ तो निष्कर्ष निकलता है कि पानी और मछली एक – दूसरे से जुड़े हुऐ है। साथ ही, पर्यावरण संतुलित रखने में मछली की विशेष उपयोगिता है।

शरीर के पोषण एवं निर्माण में संतुलित आहार की आवश्यकता होती है। संतुलित आहार की पूर्ति विभिन्न खाद्य–पदार्थों को उचित माना में मिलाकर की जा सकती है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भोजन के विभिन्न अवयवों जैसे प्रोटीन, वसा कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, खनिज–लवण आदि की आवश्यकता होती है जो विभिन्न खाद्य पदार्थो में भिन्न–भिन्न मात्राओं में पाई जाती

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 6, June - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

है। स्वस्थ्य शरीर के निर्माण में प्रोटीन की मात्रा अधिक होनी चाहिए क्योंकि यह मांशपेशियों, तंतुओं आदि की संरचना करती है। विटामिन, खनिजलवण आदि शरीर की मुख्य क्रियाओं को संतुलित करते है। मछली में लगभग 70 से 80 प्रतिशत पानी, 13 से 22 प्रतिशत प्रोटीन, 1 से 3.5 प्रतिशत खनिज लवण एवं 0.5 से 20 प्रतिशत चवी पाई जाती है। कैल्शियम, पोटैशियम फास्फोरस, लोहा, सल्फर, मैंगनीशियम , तांबा, जस्ता, मैंग्नीज, आयोडीन आदि खनिज पदार्थ मछलियों में उपलब्ध होते है, जिनके फलस्वरूप मछली का आहार काफी पौटिक माना जाता है। इनके अतिरिक्त राईवोफ्लोरिन, नियजसिन, पेन्टोथेनिक, वायोटीन, थाईमिन, विटामिन बी 12, बी 6 आदि भी पाऐ जाते है, जो शारीरिक विकास एवं स्वास्थ्य के लिए आवश्यक होता है।

मछली विश्व के लगभग सभी देशों में आहार के रूप में उपयोग किया जाता है। सम्पूर्ण विश्व में लगभग 20,000 प्रजातियों एवं भारत में लगभग 2200 प्रजातियाँ पाई जाती है। भारत में गंगा नदी में लगभग मछलियों की लगभग 375 प्रजातियां उपलब्ध है एवं उत्तर प्रदेश और बिहार में लगभग 111 प्रकार की प्रजातियां उपलब्ध है।

वर्त्तमान समय में मत्स्यपालन एक नव व्यवसाय के रूप में उभरी है। विश्व के वातावरण में जहाँ वैश्वीकरण का माहौल बना वही प्रायः सभी देशों से लोग आर्थिक सम्पन्नता हेतु कोई एक दायरे में व्यवसाय किसी जाति अथवा समुदाय तक सीमित नहीं रहकर जातिगत अथवा समुदायगत सभी में किया जाता है। आज स्थिति यह है, कि कोई भी जाति अथवा समुदाय का आदमी किसी भी व्यवसाय को अपनाने लगा है।

मध्य पालन हेतु आवश्यक तैयारियाँ :–

जिस प्रकार कोई किसान अच्छी उपज के लिए सबसे पहले अपनी पूंजी लगाकर खेत तैयार करता है एवं आवश्यक संसाधन एकत्रित करके खेती करता है, उसी प्रकार मत्स्य पालन हेतु आवश्यक तैयारियों की जरूरत होती है। जैसे तालाब निर्माण, तालाब में कम से कम वर्ष में 10 – 11 माह तक पानी की उपलब्धता उन्नतशील बीज, आवश्यक आहार, औषधि एवं अन्य संसाधनों की उपलब्धता इत्यादि।

मत्स्य पालन हेतु 0.2 हेक्टेयर से 5.0 हेक्टेयर तक के ऐसे तालाबों का चयन किया जाना चाहिए जिसमें 8 – 10 माह तक पानी की उपलब्धता हो। तालाब को सदा बहार रखने हेतु जल की आपूर्ति का साधन होना चाहिए। तालाब में वर्ष भर पानी अवश्य बना रहना चाहिए। बाँधों का बड़ा होना, ऊँचा होना, तल का असमान होना, पानी की निकासी एवं आगमन का रास्ता होना, दूसरे क्षेत्रों से अधिक पानी आने की संभावना बने रहना आदि कमियाँ सामान्य रूप से होती है जिसका समाधान थोड़ा प्रयास करके किया जा सकता है। तालाब को उचित आकार प्रकार देने से यदि कही पर टीले रह जाते है, तो उसका मिट्टी निकालकर बांध पर रख देना चाहिए।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 6, June - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नऐ तालाब के निर्माण हेतु उपयुक्त स्थल का चुनाव आवश्यक है। तालाब निर्माण के लिए मिट्टी की जल धारण क्षमता एवं उर्वरकता को चयन का आधार माना जाना चाहिए। उत्तर एवं बेगर भूमिपर तालाब नहीं बनाना चाहिए। इसके अतिरिक्त चिकनी मिट्टी के तालाब का निर्माण सर्वधा उपर्युक्त होता है। क्योंकि ऐसी मिट्टी की जल धारण क्षमता अधिक होती है एवं पी एच 6.5 से 8.0, आर्सेनिक कार्बन 1 प्रतिशत तथा मिट्टी में रेत 40 प्रतिशत, सिल्ट 30 प्रतिशत एवं क्ले 30 प्रतिशत की मात्रा आवश्यक स्थिति है।

बिहार के परिपेक्ष्य में मत्स्यपालन एक सर्वथा सर्वोत्तम एवं नवव्यवसाय है। साथ ही यह व्यवसाय रोजगार का सशक्त माध्यम बना रहा है। वर्त्तमान समय में मत्स्यपालन को बिहार के परिपेक्ष्य में शैशववस्था कहना काफी तथ्यसंगत है फिर भी इसे लोकप्रिय एवं व्यापक स्तर पर सार्वभौम बनाने की आवश्यकता प्रतीत होती है। इसी तथ्य को आधार मानते हुए शोधार्थी द्वारा ''मत्स्यपालन की सार्वभौमिकता एवं बाधक तत्वों के विश्लेषणात्मक अध्ययन'' से संबंधित शीर्षक पर शोधकार्य करने का निर्णय लिया गया है।

प्रस्तत शोध में आवश्यक संगत जानकारी हेतु शोधार्थी द्वारा अध्ययनोपरान्त कुछ तथ्य संग्रहित किये गये है। इस परिपेक्ष्य में मत्स्यपालन तकनीक की व्याख्या करते हुए बताया गया है कि नवीन तकनीको एवं वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग करके मत्स्यपालन को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। (मत्स्य विभाग , उत्तर प्रदेश सरकार, भारत)

उत्तर प्रदेश सरकार में मत्स्य विभाग द्वारा मत्स्य पालन के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश के रूप में बताया गया है कि मत्स्य पालन हेतु प्रारंभ करने का उपयुक्त समय अप्रैल, मई एवं जून का महीना है। साथ ही , दूसरी तिमाही (जुलाई, अगस्त, सितम्बर में) मत्स्य बीज का संचयन एवं आवश्यक खाद्य पदार्थो की जाँच एवं उपलब्धता आवश्यक है। इसी तरह तीसरी तिमाही अक्टूबर, नवम्बर एवं दिसम्बर में मछलियों की वृद्धि की जाँच पूरक आहार, उर्वरको का प्रयोग इत्यादि आवश्यक है एवं अंतिम चतुर्थ तिमाही (जनवरी, फरवरी एवं मार्च महीने में बड़ी मछलियों की निकासी, बिक्री पूरक आहार का प्रयोग, उवर्रकों का प्रयोग एवं बैंक ऋण अदायगी इत्यादि मुख्य होती है।

कुमार सम्पत (2013) ने अपने शोध परिणाम के आधार पर पाया है, कि मत्स्य पालन हेतु तकनीकी शिक्षा, वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग एवं आवश्यक स्थानीय स्थितियों का होना आवश्यक होता है। इसी के प्रयोग में मत्स्य पालन को सार्वभौम बनाया जा सकता है।

इस तरह, मत्स्यपालन से संबंधित अनेकों संदर्भ उपलब्ध है, जिसका अवलोकन करके प्रस्तुत शोध में आवश्यक आधार प्राप्त किया गया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 6, June - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शोध का उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य मत्स्यपालन की अवधारणा स्पष्ट करना एवं इस क्षेत्र में शोधात्मक कार्य के आधार पर बाधक कारकों को खोजना है। इसके अतिरिक्त मत्स्य पालन को सार्वभौम बनाने हेतु आवश्यक परामर्शन प्रस्तुत करना है।

शोध की परिकल्पना :-

प्रस्तुत शोध की मुख्य परिकल्पना यह है कि मत्स्य पालन हेतु आवश्यक संसाधन होने के बाबजूद आवश्यक जानकारी का आभाव एवं प्रेरणात्मक कारकों का आभाव होगा।

प्रविधि :-

प्रस्तुत शोध में अध्ययन हेतु प्रविधि के रूप में निम्नांकित तथ्यों का अनुसरण किया गया।

(क) प्रतिदर्श :-

प्रस्तुत शोध में प्रतिदर्श के रूप में कुल १५० बेरोजगार युवकों का चयन किया गया।

(ख) प्रतिदर्श चयन की विधि :-

प्रस्तुत शोध में प्रतिदर्शों के चयन में उद्देश्य पूर्ण प्रतिदर्शन विधि का अवलोकन किया गया।

(ग) अध्ययन क्षेत्र :-

प्रस्तुत शोध में अध्ययन क्षेत्र के रूप में समस्तीपुर जिला का चयन किया गया।

(घ) प्रश्नावली :-

प्रस्तुत इस शोध में शोध शीर्षक से संबंधित आवश्यक एवं संगत प्रदत संग्रह के लिए शोधार्थी द्वारा तैयार किया गया प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

(ड़) प्रदत–संग्रह की प्रक्रिया :–

प्रस्तुत संग्रह के लिए शोधार्थी द्वारा विस्तृत कार्य योजना तैयार किया गया एवं बनाए गए कार्य योजना के अनुसार अध्ययन क्षेत्र का भ्रमण किया गया। अध्ययन क्षेत्र में निवास करने वाले 150 बेरोजगार युवको से संपर्क किया गया। तत्पश्चात् उनके साथ आत्मीयता का संबंध स्थापित किया गया। साथ ही उन्हें, उनसे मिलने का प्रयोजन भी बताया गया। इसके बाद उत्तरदाताओं को एक सामूहिक स्थल पर समूह रूप बनाकर प्रदत संग्रह का कार्य सम्पादित किया गया। प्रदत संग्रह कार्य म आवश्यक सहयोग के लिए उत्तरदाताओं को धन्यवाद दिया गया।

(च) प्रदतों का विश्लेषण :-

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 6, June - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उत्तरदाताओं से संग्रहित किऐ गए प्रदतों को विश्लेषणात्मक पद्धति के आधार पर वर्त्तमान परिपेक्ष में परिणाम तैयार किया गया।

परिणाम :–

शोधार्थी द्वारा तैयार किऐ गऐ परिणामों विवरण निम्नवत हैः–

सारणी संख्या–01

मत्स्यपालन से संबंधित व्यवसाय के संबंध में जानकारी से संबंधित परिणामः–

क्र०सं०	समूह	संख्या	सकारात्मक जवाब	नकारात्मक जवाब
1	कुल उत्तरदाताएँ	150	79 (52.67%)	71 (47.33%)

सारणी संख्या–02

मत्स्यपालन से संबंधित व्यवसाय करने की अभिरूचि आधारित परिणाम :

क्र० सं०	समूह	संख्या	सकारात्मक जवाब	नकारात्मक जवाब
1	कुल उत्तरदाताएँ	150	106 (70.67%)	44 (29.33%)

सारणी संख्या–03

मत्स्यपालन से संबंधित सरकारी योग्यता की जानकारी से संबंधित उत्तरदाताओं की अनुक्रियाएँ :

क्र०सं०	समूह	संख्या	सकारात्मक जवाब	नकारात्मक जवाब
1	कुल उत्तरदाताएँ	150	61 (40.67%)	89 (59.33%)

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 6, June - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सारणी संख्या–04

मत्स्यपालन से संबंधित संसाधन की कमी से संबंधित उत्तरदाताओं की अनुक्रियाऐं:

क्र०सं०	समूह	संख्या	सकारात्मक जवाब	नकारात्मक जवाब
1	कुल उत्तरदाताएँ	150	106 (70.67%)	44 (29.33%)

व्याख्याः–

सारणी संख्या 01 के अवलोकन से स्पष्ट है कि मत्स्य पालन से संबंधित जानकारी के संबंध में कुल उत्तरादाताओं में जहाँ 79 अर्थात् 52.67 प्रतिशत नें अपनी अनुक्रिया सकारात्मक रूप में दिया है, वही 71 अर्थात् 47.33 प्रतिशत उत्तरादाताओं ने नकारात्मक रूप में जबाब दिया है। इस तरह के परिणाम के संबंध में स्पष्ट है कि मत्स्य पालन के संबंध म अधिकांश युवकों को जानकारी है। अर्थात् अधिकांश युवक मत्स्यपालन के संबंध में जानकारी रखते है।

सारणी संख्या 02 के अवलोकन से स्पष्ट है कि मत्स्यपालन से संबंधित व्यवसाय के संबंध में अभिरूचि के संबंध में कुल 150 उत्तरादाताओं में जहाँ मात्र 62 अर्थात् 41.33 प्रतिशत उत्तरादाताओं में 'हॉ' में अपनी अनुक्रिया दी है, वही 88 अर्थत् 58.67 प्रतिशत उत्तरादाताओं में 'ना' में अपनी अनुक्रिया दी है। इस तरह के परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है कि मत्स्यपालन से संबंधित सरकारी व्यवसाय में अभिरूचि का मत्स्यपालन पर अधिक प्रभाव पड़ता है।

सारणी संख्या 03 के अवलोकन से स्पष्ट है कि मत्स्यपालन से संबंधित सरकारी योगताओं की जानकारी के संबंध में कुल उत्तरादाताओं में जहाँ मात्र 61 अर्थात 40.67 प्रतिशत उत्तरादाताओं ने 'हॉ' जबाव दिया है वही 88 अर्थात 59.33 प्रतिशत उत्तरादाताओं ने 'ना' में जबाव दिया है। इस परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है, कि अधिकांश उत्तरदाताओं को मत्स्यपालन से संबंधित सरकारी योग्यताओं के संबंध मे जानकारी के अभाव के पीछे उनकी अभिरूचि का नहीं होना, सूचना संसाधन की कमी होना इत्यादि है।

सरकारी संख्या 04 क अवलोकन से स्पष्ट है कि मत्स्यपालन के लिए संसाधन से संबंधित उत्तरादाताओं से प्राप्त अनुक्रिया के आधार पर जहाँ 106 उत्तरादाताओं ने संसाधन की कमी को बताया है। वहीं 44 उत्तरादाताओं ने मत्स्यपालन हेतु संसाधन की कमी को स्वीकार नहीं किया है। उस तरह के परिणाम क संबंध में कम जा सकता है कि मत्स्यपालन से संबंधित

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 6, June - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

व्यवसाय के लिए आवश्यक संसाधन की कमी भी एक मुख्य समस्या है। जिस कारण मत्स्य पालन का व्यवसाय सार्वभौम नहीं हो पा रहा है।

निश्कर्श :

प्रस्तुत शोध में प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष के रूप में निम्नांकित परिणाम स्पष्ट हैः

(क) मत्स्य पालन से संबंधित व्यवसाय के बारे में युवकों को जानकारी रहने के बावजूद व्यवसाय की सार्वभौतिकता निम्न है।

(ख) मत्स्य पालन के व्यवसाय में संबंधित अभिरूचि की कमी एक मुख्य बाधक कारक है।

(ग) व्यक्तियों में मत्स्य पालन से संबंधित सरकारी योग्ताओं की जानकारी की कमी का अभाव भी मुख्य बाधा है।

(घ) मत्स्य पालन में व्यवसाय में संबंधित आवश्यक संसाधनों की कमी भी एक मुख्य बाधक तत्व है।

सुझाव :–

मत्स्य पालन के व्यवसाय पर आधारित प्रस्तुत शोध के उपरान्त जो परिणाम प्राप्त हुए है उसके अवलोकन में स्पष्ट है कि यदि सभी बाधक तत्वों को दूर किया जाय तो मत्स्य पालन के व्यवसाय को और अधिक व्यापक एवं लोकप्रिय बनाया जा सकता है। साथ हीं यह व्यवसाय अधिक में अधिक बेरोजगार युवकों एवं व्यक्तियों के आर्थिक स्वनिर्भरता का आधार वन सकती है।

संदर्भ ग्रन्थः–

1. कुमार एवं कुमार (2011) : ''बिहार का भूगोल'', स्टूडेंट फ्रेंड्स, पटना।
2. पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग द्वारा प्रकाशित संदर्भ पुस्तिका।
3. भारत का आर्थिक सर्वेक्षण–2010–2012
4. राज्य परियोजना परिषद्, बिहार सरकार, पटना, बिहार, (2005) का अध्ययन रिपोर्ट
5. सांख्यिकीय एवं मूल्यांकन निदेशालय, बिहार, पटना (2008) का आर्थिक सर्वेक्षण।